RNI No.: RAJBIL/2013/54153

ISSN : 2322-0074

अलख दृष्टि

ALAKH DRISHTI

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

वर्ष-3 • अंक-10 • त्रैमासिक • अप्रेल-जून, 2015

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	संस्कृत साहित्य में नारी	डॉ. शंकरलाल शास्त्री	6-20
2.	भगवद्गीता का कर्मयोग	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	21-25
3.	समाज कार्य और सामाजिक मूल्य	डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, डॉ. पुष्पा मिश्रा	26-28
4.	वैदिक ऋचाओं में मानवाधिकार का चिन्तन	डॉ. सूरज राव	29-33
5.	संवेग के मूल रहस्य की जैन दृष्टि	डॉ. समणी मल्लिप्रज्ञा	34-41
6.	पर्यावरणीय चिन्तन एवं जैन दर्शन	ममता जैन	42-47
7.	परिवार मूल्य, शिक्षा की नींव	डॉ. आभा सिंह, गिरधारी लाल शर्मा	48-50
8.	**Debating Gandhi**	**Dr. Anil Dutta Mishra**	51-55
9.	**Book Review of Redress Mechanisms for Victims of Domestic Violence**	**Dr. Sanjay Goyal**	56-58

समाज कार्य और सामाजिक मूल्य

डॉ. बिजेन्द्र प्रधान, डॉ. पुष्पा मिश्रा

प्रस्तावना :-

व्यक्ति एवं समाज एक दूसरे पर आश्रित है। जहां समाज ने व्यक्ति को गरिमामय अस्तित्व प्रदान किया है, वहीं समाज द्वारा निर्धनता, बेकारी जैसी विविध प्रकार की समस्याएं भी उत्पन्न की गयी है। इन समस्याओं के समाधान हेतु आदिकाल से ही प्रयास किये जाते रहे है। इन्हीं प्रयासों की श्रृंखला में समाज कार्य एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

निर्धनों को दान देना प्राचीनकाल से चला आ रहा है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार दान एक पुण्य का कार्य समझा जाता रहा है। दान के माध्यम से केवल अस्थाई रूप से दान लेने वाले व्यक्ति से आर्थिक समस्या का समाधान किया जा सकता है। दान लेने वाला व्यक्ति दूसरों पर निर्भर बना रहता है।

समुदाय की सामान्य समस्याओं के समाधान के लिये श्रमदान का प्रयोग किया जाता रहा है। इसका सहारा लेकर सार्वजनिक मार्गों का निर्माण, तालाबों की खुदाई, सार्वजनिक सफाई जैसे अनेक प्रकार के कार्य किये जाते रहें है। समाज कल्याण एवं समाज सुधार के माध्यम से सामाजिक मूल्यों को सकारात्मक दिशा प्रदान की जाती है। आर्थिक उन्नति के लिए प्रचलित कुरीतियां एवं बुराइयां दूर हो इस दिशा में प्रयास करना अनिवार्य है। समाज में आकस्मिक घटनाओं के शिकार व्यक्तियों को धन अथवा सेवा रूप में अपना योगदान देना, सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक बीमा, जन सहायता एवं मनो सामाजिक समस्याओं से निजात पाना ही समाज कार्य के मूल्य है।

समाज कार्य का उद्देश्य मानव कल्याण करना है। यह कल्याण तभी सम्भव हो सकता है, जब वह सामाजिक मूल्यों को अपनी क्रियाविधि में समाहित करे, क्योंकि मूल्य ऐसे सामाजिक प्रतिमान, लक्ष्य तथा आदर्श होते हैं जिसके आधार पर सामाजिक परिस्थितियों तथा व्यक्ति के व्यवहार का मूल्यांकन किया जा सकता है। मूल्यों के आधार पर ही मनुष्य के सामाजिक जीवन की शैली का निर्धारण होता है तथा अन्तःक्रियायें सम्भव होती है।

जानसन के अनुसार "मूल्यों को एक सांस्कृतिक व कंवन वैयक्तिक धारणा सा मानक के रूप परिभाषित किया जा सकता है, जिसके द्वारा वस्तुओं की एक-दूसरें के सन्दर्भ में तुलना की जाती है, उन्हें स्वीकृत या अस्वीकृत किया जाता है, उन्हें सापेक्ष रूप से अपेक्षित या उपेक्षित, अधिक या कम, बुद्धिमत्तापूर्ण या मूर्खतापूर्ण अधिक या कम सही माना जाता है।"

कॉस के अनुसार सामाजिक मूल्य के कुछ बिन्दू इस प्रकार हैं -

1. मनुष्य की महत्ता तथा गरिमा
2. मानव प्रकृति में पूर्ण मानवीय विकास की क्षमता
3. मतभेदों के लिये सहनशीलता
4. मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि
5. स्वाधीनता में विश्वास
6. आत्म निर्देशन
7. अनिर्णायक प्रवृत्ति
8. रचनात्मक सामाजिक सहयोग
9. मनुष्य तथा प्रकृति के द्वारा उत्पन्न किये गये खतरों से अपने अस्तित्व की रक्षा आदि।

इस क्रम में कोनोप्का ने समाज कार्य के दो मूल्यों की चर्चा की है।

1. प्रत्येक व्यक्ति का आदर तथा प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यताओं के पूर्ण विकास का अधिकार।
2. व्यक्तियों की पारम्परिक निर्भरता तथा एक-दूसरे के प्रति अपनी योग्यता के अनुसार उत्तरदायित्व।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार समाज कार्य के दार्शनिक एवं नैतिक मूल्यों एवं मान्यताओं का उल्लेख निम्नलिखित रूप में किया गया है।

किसी व्यक्ति की सामाजिक पृष्ठभूमि तथा व्यवहार को ध्यान में रखें बिना उसके महत्त्व , मूल्य या योग्यता को मान्यता प्रदान करना तथा मानव प्रतिष्ठा एवं आत्म-सम्मान प्रदान करना चाहिए तथा व्यक्तियों, वर्गों एवं समुदायों के विभिन्न मतों का आदर करने के साथ-साथ जन कल्याण के साथ उसका सामन्जस्य स्थापित करना चाहिए। आत्म सम्मान एवं उत्तरदायित्व पूरा करने की योग्यता बढ़ाने की दृष्टि से स्वावलम्बन को प्रोत्साहित करने एवं व्यक्तियों के संतोषमय जीवन निर्वाह करने के लिए समुचित अवसर में वृद्धि करने की दिशा में प्रयासरत होना चाहिए।

मूल्यपरक सामाजिक व्यवस्था की चुनौतियां -

सामाजिक चुनौतियां - पारस्परिक निर्भरता का अभाव, सामुदायिक जीवन में सकारात्मक योगदान की कमी, व्यक्ति एवं समाज के कल्याणकारी उपागमों में कमी आदि मुख्यतया सामाजिक चुनौतियों के रूप में सामने आता है। परिवारिक विघटन, व्यक्ति का अलगाववादी विचारधारा एक कुरूप समाज के निर्माण का कारक बन रहा है। संचयात्मक मूल्यों का विकास तेजी से हो रहा है। जबकि स्वस्थ समाज के लिये वितरक मूल्यों का होना अनिवार्य है। आधुनिकीकरण ने समाजिक मूल्यों का बहुत ह्रास किया है।

आर्थिक चुनौतियां - असमान वितरण अपने सुख-सुविधाओं के लिये प्रकृति का दोहन करके व्यक्तिगत उन्नति को लक्ष्य बनाना, व्यापार -वाणिज्य में असत्य का सहारा लेना सामाजिक मूल्यों के लिये एक बहुत बड़ी चुनौती है। उत्पादन की व्यावहारिकता श्रम के शोषण पर निर्भर हो रहा है। समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा जो कृषि पर निर्भर है, उनकी समस्याओं को, उनके परिस्थितियों को समझकर सामाजिक स्तर पर समाधान किया जाना चाहिए। जबकि व्यक्ति आत्म क्रेन्द्रित होता जा रहा है जिसके कारण सामाजिक विषमता एक चुनौती के रूप में सामने आयी है।

राजनीतिक चुनौतियां - भारत में प्रजातंत्र की राजनीति से आम जनता का विश्वास धीरे-धीरे उठ रहा है, क्योंकि जिसकी लाठी उसकी भैंस जैसी कहावत वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में चरितार्थ हो रही है। जो प्रारम्भ से उन्नत है, तथा जिसकी पंहुच समाज के श्रेष्ठ व्यक्तियों तक है वहीं राजनीति में अब्वल है। राजनीति सेवा और सद्भाव रूपी मूल्यों से विचलित होकर स्वार्थपरक, व्यक्तिगत उन्नति एवं भाई-भतीजावाद को बढ़ावा दे रही है। इन

सभी चुनौतियों का सामना करने के लिये समाज-कार्य मूल्य का अवलम्बन श्रेठ है, जो निम्नलिखित है -

1. समाज कार्य आर्थिक एवं राजनीतिक शक्ति से अधिक समतावादी ढ़ंगों की सहायता से पुनर्वितरण में विश्वास करता है।

2. समाजकार्य उत्पादन की सामाजिक व्यावहारिकता पर विश्वास करता है तथा उत्पादन को सामाजिक उद्धेश्य के अधीन मानता है।

3. समाज कार्य का विश्वास है कि आर्थिक भूमिका प्रदत्त प्रस्थिति के आधार पर होना न होकर उपलब्धि के मानक के आधार पर होना चाहिए।

4. समाज कार्य ऐसे सेवारत राज्य में विश्वास करता है जिसका मुख्य उद्धेश्य प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण हो तथा जो व्यक्ति के संरक्षण को मौलिक प्रजातांत्रिक कर्त्तव्य के रूप में स्वीकार करता है।

5. समाज कार्य सामाजिक न्याय में विश्वास करता है।

6. समाज कार्य धार्मिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक विचार धाराओं की प्रतिबद्धता में विश्वास रखता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रो. सुरेन्द्र सिंह, प्रो. आर.बी.एस. वर्मा (2011), भारत में समाज कार्य का क्षेत्र, न्यू रॉयल बुक कम्पनी लखनऊ
2. पी.डी. मिश्र. सुरेन्द्र सिंह (2010), समाज कार्य इतिहास, दर्शन एवं प्रणालियां, न्यू रॉयल बुक कम्पनी लखनऊ
3. मनोज शर्मा (2010), भारत में समाज कार्य के क्षेत्र, इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर
4. ए. एन. सिंह, ए. पी. सिंह (2013), समाज कार्य, न्यू रॉयल बुक कम्पनी लखनऊ
5. डी. के सिंह (2014), समाज कार्य में समाजशास्त्रीय अंगभूत, न्यू रॉयल बुक कम्पनी लखनऊ

सहआचार्य
समाज कार्य विभाग
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

सहायक आचार्य
समाज कार्य विभाग
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

♦ ♦ ♦